



स्वाधीनता संग्राम (बाल नाटक)

रेखा जैन

चित्रांकन

मनीष वर्मा

रेखा जैन लगभग पांच दशकों से नाट्य-लेखन और प्रस्तुतियों द्वारा बालरंग की अनिवार्यता रेखांकित करती आ रही हैं। सर्वप्रथम 1943 में अपने पति प्रख्यात कवि, आलोचक नेमिचन्द्र जैन के साथ इष्टा के रंगमंच पर बंगाल के अकाल के समय शम्भु मित्र द्वारा निर्देशित नाटक 'अंतिम अभिलाषा' में अभिनय किया तथा बंगाल कल्चरल स्क्वाड और सेंट्रल ट्रुप जैसे सांस्कृतिक संगठनों में आजादी से संबंधित नृत्य नाटकों में प्रमुख भूमिका निभाई। कलकत्ता, बंबई, इलाहाबाद प्रवास के बाद 1956 में दिल्ली आने पर बच्चों के थियेटर चिल्ड्रेन्स थियेटर से जुड़ीं। बच्चों की रचनात्मक दृष्टि से इन्होंने 1979 में 'उमंग' बाल नाट्य मंच की स्थापना की।

इन्हें लेखन कार्य के लिये हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा साहित्यकार और कृति सम्मान तथा उत्तर प्रदेश के सम्मान के अतिरिक्त बालरंग के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए कई सम्मान मिल चुके हैं, जिनमें केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी, साहित्य कला परिषद दिल्ली, संगीत नाटक अकादमी उत्तर प्रदेश, दिल्ली नाट्य संघ, इंडो एशियन लिटरेरी क्लब, प्रमुख हैं। बाल रंगकर्म विशेषज्ञ के रूप में भारत सरकार के सांस्कृतिक समझौते के तहत यूरोप तथा कई देशों की यात्राएं भी इन्होंने कीं।



₹ 30.00

ISBN 978-81-237-5222-8

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया



नेहरू बाल पुस्तकालय

स्वाधीनता संग्राम

(बाल नाटक)

रेखा जैन

चित्रांकन
मनीष वर्मा



नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

श्रद्धेय पी.सी. (पूरनचंद्र) जोशी
को समर्पित
जिन्होंने हर तबके के लोगों को
आजादी की लड़ाई से जुड़ने
और मुझे
नाटक के जरिए जुड़ने की प्रेरणा दी

ISBN 978-81-237-5222-8

पहला संस्करण : 2008

पांचवीं आवृत्ति : 2012 (शक 1933)

© रेखा जैन

Swadhinta Sangram (Hindi)

₹ 30.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II

वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित

भूमिका

‘स्वाधीनता संग्राम’ नाटक में अंग्रेजी राज्य से अपने भारत देश को आजाद कराने के संघर्ष का संक्षिप्त इतिहास बताने का प्रयास किया गया है। अंग्रेजों ने चालाकी से हमारे देश पर अधिकार करके देश का शोषण किया, देशवासियों पर निर्ममतापूर्वक अत्याचार किए। जालियांवाला बाग, कालापानी, जुलाहे बुनकरों की अंगुलियां काटना, तरह-तरह से अपमानित करना आदि ऐसी घटनाएं हैं जिनसे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इस अपमान और गुलामी से मुक्त होने के लिए जाति-धर्म से ऊपर उठकर आदिवासियों से लेकर गांव, शहर के हजारों लाखों स्त्री-पुरुष, बूढ़े-बच्चे आजादी पाने के लिए बेचैन हो स्वाधीनता संग्राम में जुट पड़े। यह पूरा जन आंदोलन समुद्र की तरह उमड़ता हुआ तूफान जैसा था जहां हथियारों के बिना भी ऐसी अपूर्व ताकत थी कि अंग्रेजों को भारत छोड़कर जाना पड़ा।

आजादी के आंदोलन से मैं स्वयं भी जुड़ी थी इसलिए मुझे लगा कि बच्चों को मालूम होना चाहिए कि वह आजादी का संघर्ष क्या था, कितने स्तर पर कितने लोगों ने, कहाँ-कहाँ, कैसे-कैसे इसमें हिस्सा लिया था। जिन वीरों ने अपने जीवन की कुर्बानी दी, उनका आजाद भारतवासियों के लिए क्या सपना था। पर आज देश में जिस प्रकार भ्रष्टाचार, हिंसा, पैसे की होड़ बढ़ रही है गरीब और गरीब, अमीर और अमीर होता जा रहा है। विकास के ऐसे रूप को देखकर मुझे बड़ी घबराहट होती है। लगातार लगता है कि कहीं इस पूंजीवादी विकास की चमक दमक में खोकर फिर से एक नई गुलामी के चंगुल में फंस जायें। समय की गंभीरता को देखते हुए मुझे यह जरूरी लगा कि बच्चों को समय-समय पर उन वीरों के स्वाभिमान की, उनके सपनों की याद दिलाना जरूरी है जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपनी जान भी कुर्बान कर दी। उनके सपने का एक हिस्सा यह भी था कि हमारे देश में सभी अमीर और गरीब बराबरी से आत्मसम्मान से रह सकेंगे। ऐसे सम्मानपूर्ण समाज को बनाए रखने का जिम्मा इस भावी पीढ़ी पर है। मैं चाहती हूँ हमारे छोटे से छोटे बच्चे भी सरलता से आजादी के संघर्ष के इतिहास को जान सकें। इसी उद्देश्य से मैंने इसे नाटक के रूप में लिखा है।

यह नाटक आजादी की स्वर्ण जयंती पर और अब देश के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की 150वीं वर्षगांठ पर भी बच्चों ने किया था। नाटक की तैयारी के दौरान जैसे-जैसे उन्हें स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग, संयम, वीरतापूर्ण बलिदान के किस्से मालूम होते गये, उन बच्चों की आंखों में अनोखी आत्मगौरव की चमक दिखाई दी, और धीरे-धीरे वे उन चरित्रों से ऐसे जुड़ते गए कि अभिनय में पात्रों की सजीवता के कारण प्रदर्शन प्रभावशाली हुआ। इससे यह विश्वास भी दृढ़ हुआ कि यदि बच्चों को सही दिशा दिखाई जाये तो हमारी इस भावी पीढ़ी के बच्चे इतने सजग और समर्थ हैं कि बाहरी पूंजीवादी विकास की चमक-दमक के प्रलोभन में न आकर देश की आजादी के लिए बलिदानों के प्रतीक अपने इस गौरवशाली तिरंगे झंडे पर कभी आंच नहीं आने देंगे। उम्मीद है यह नाटक देश के बच्चों को सही राह दिखाने की दिशा में एक कदम होगा।

नाटक के प्रकाशन के लिए मैं नेशनल बुक ट्रस्ट, विशेषकर प्रोफेसर विपिन चन्द्र की हृदय से आभारी हूँ कि उन्होंने इस नाटक को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर प्रकाशित करने के लिए उपयुक्त समझा। नाटक के आलेख में कुछ महत्वपूर्ण सुझाव के लिए मैं श्री कमाल अहमद के लिए भी कृतज्ञ हूँ। श्री मनीष वर्मा को भी धन्यवाद देती हूँ कि उन्होंने अपने चित्रों द्वारा नाटक को अधिक रोचक और प्रासंगिक बनाया।

—रेखा जैन

दृश्य 1	वाचक का प्रवेश
दृश्य 2	मेला
दृश्य 3	अंग्रेजों का आना
दृश्य 4	दो राजाओं का युद्ध
दृश्य 5	स्वाभिमानी राजा का दरबार
दृश्य 6	जुलाहे
दृश्य 7	मंगल पांडे
दृश्य 8	झांसी की रानी
दृश्य 9	अंग्रेजी शासन से विरोध
दृश्य 10	गांव का दृश्य, मुखिया, जमींदार
दृश्य 11	अकाल
दृश्य 12	क्लब
दृश्य 13	फांसी का दृश्य
दृश्य 14	26 जनवरी, जुलूस, झंडा फहराना
दृश्य 15	1942 भारत छोड़ो आंदोलन जुलूस, अंग्रेजों को भगाना
दृश्य 16	राष्ट्रीय झंडा फहराना
दृश्य 17	प्रश्नकर्ता

पात्र

- अखबार वाले
- सूत्रधार (वाचक)
- मैरी-गो-राउंड वाला
- झूले वाले बच्चे
- बाईस्कोप वाला
- देखने वाले बच्चे
- खिलौने वाला
- चुड़ीवाली
- फूलवाली
- हलवाई
- पहाड़ी नृत्य के बच्चे
- उत्तर प्रदेश नृत्य वाले बच्चे
- ढोलवाला और नाचने वाले
- अंग्रेज
- अंग्रेज सिपाही
- दो राजा
- उनके सिपाही
- स्वाभिमानी राजा
- रानी
- राजकुमारी
- मंत्री
- पंखे वाली
- नर्तकी
- जुलाहे-जुलाहिन
- मंगल पांडे
- झांसी की रानी
- सखियां
- गद्दार सिपाही
- बालगंगाधर तिलक
- लाला लाजपत राय
- विपिन चंद्र पाल
- सुनने वाला जन समुदाय
- गांव का मुखिया
- मुनीम
- सेठ
- गांव वाले किसान
- किसान औरतें
- पंडित
- बैल
- किसान, किसान औरतें
- अंग्रेज (क्लब में)
- अंग्रेज अफसर, उनकी पत्नियां
- भारतीय दम्पति
- बैरा
- भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव
- जुलूस 26 जनवरी का
- भारत का तिरंगा झंडा लाने वाला
- नन्हें मुन्ने सिपाही
- प्रश्नकर्ता (आम व्यक्ति)

अखबार वाले

[दो अखबार वाले दर्शकों के बीच से अखबार बेचते हुए मंच पर आते हैं।]

पहला अखबार वाला : आज की ताजा खबर, आज की ताजा खबर, सुनिए, सुनिए, सुनिए—निठारी कांड ने क्रूर इतिहास रचा, हजारों बच्चों की नृशंस हत्या।

दूसरा अखबार वाला : झुगी हटाओ, मॉल बचाओ, घरों में बिजली गुम, मॉल में एयर कंडीशन की बहार।

पहला अखबार वाला : चाहे उजड़ें खेत-खलिहान, दिल्ली बनेगा पेरिस्तान।

दूसरा अखबार वाला : कला संस्कृति पर हमला, कला संस्कृति पर हमला।

पहला अखबार वाला : बड़ीदरा के कला छात्रों को जेल, और कला के बादशाह एम.एफ. हुसैन को देश निकाला।

दूसरा अखबार वाला : भीड़ कम करने के लिए रेहड़ी रिक्शा वालों पर गाज, पर कारों ही कारों की भरमार।

पहला अखबार वाला : मिलावट, मिलावट, मिलावट, खाने में मिलावट, दूध में मिलावट, दवाईयों में मिलावट, सीमेंट में मिलावट।

दूसरा अखबार वाला : आई विदेशी मुद्रा आई, नई गुलामी संग-संग लाई।

पहला अखबार वाला : नैतिक मूल्यों पर हमला, भारत में नैतिक मूल्यों पर हमला, चारों ओर भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी का बोल-बाला।

दूसरा अखबार वाला : दर्दनाक खबर—दर्दनाक खबर, कर्ज से परेशान हजारों किसानों ने की आत्महत्यायें। आत्महत्यायें।

दृश्य-1

[एक वाचक का प्रवेश]

वाचक : (अखबार वालों से) अरे भाई, इतनी बुरी-बुरी खबरें क्यों सुना रहो हो। हमारे देश ने कई क्षेत्रों में तरक्की की है उसकी भी तो कुछ बताओ, अच्छा अब तुम जाओ, हमें अपना नाटक दिखाने दो।



[अखबार वाले अखबार बेचते-बेचते चले जाते हैं। 'आज की ताजा खबर, आज की ताजा खबर। सुनिए, सुनिए, सुनिए।]

(दर्शकों से) आप सब जानते हैं कि हमलोग इस वर्ष देश में आजादी के प्रथम संघर्ष की 150वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। सोचा इस अवसर पर कुछ पुरानी यादें मिलकर दुहरायेंगे। इससे हमारे दर्शक बच्चों को मालूम होगा कि कई सौ साल पहले अंग्रेजों ने भारत पर अधिकार जमाकर क्या-क्या किया और फिर हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने भारत को आजादी कैसे दिलाई। तो देखिए हमारा नाटक "स्वाधीनता संग्राम"।

[वाचक चले जाते हैं, फिर अन्य वाचकों के साथ गाते हुए मंच पर आते हैं।]

गीत

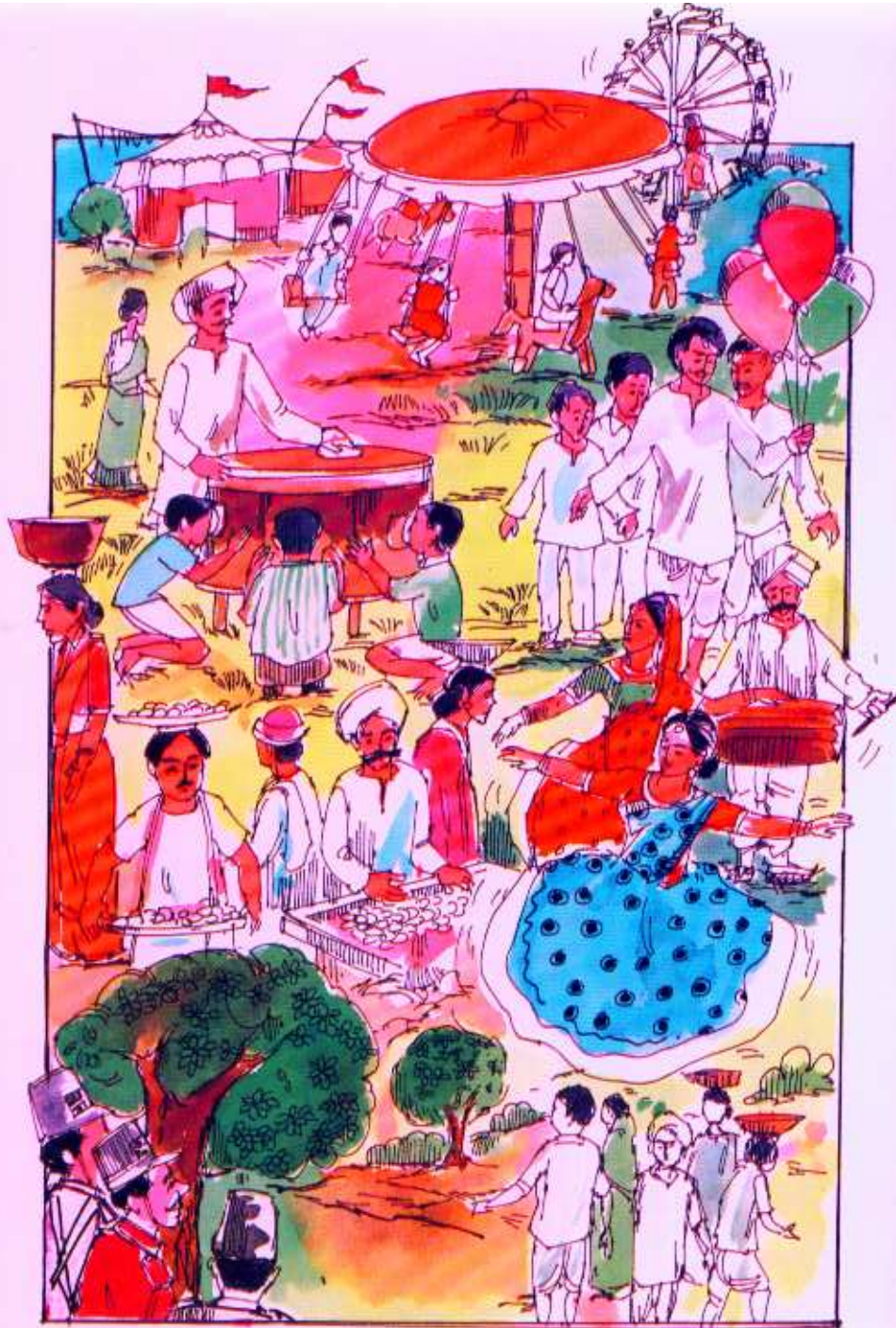
भारत की आजादी की हम कथा सुनाते हैं
आजादी अनमोल यही संदेश बताते हैं

यह धरती है शस्य श्यामला
ऊंची पर्वत-शिखर शृंखला

कल-कल करती नदियों का स्वर
उमड़ हिलोरे लेता सागर
भरे खेत खलिहान मगन पक्षी भी गाते हैं

सबसे सुंदर देश हमारा
है सारी दुनिया से न्यारा
सुखी यहां के रहने वाले
अपनी मेहनत के मतवाले
करते दिनभर काम शाम को मौज मनाते हैं

भारत सबका मन ललचाये
सोने की चिड़िया कहलाये
इतने में दुर्दिन का फेरा
काली छाया ने आ घेरा



उस छाया से लड़ने का इतिहास दिखाते हैं
भारत की आजादी की हम कथा सुनते हैं।

[गाना गाते हुए वाचकों का मंच से प्रस्थान]

दृश्य-2 : मेला

[एक ओर मैरी-गो-राउंड वाला है, जिस पर बच्चे चारों ओर घूम रहे हैं, एक ओर एक तस्वीर दिखाने वाला आदमी एक डब्ले में बच्चों को ऐतिहासिक फिल्म दिखा रहा है। गुब्बारेवाला, फूलवाली, बूड़ियावाली, मिठाईवाला, गहनेवाली आदि अपना सामान बेच रहे हैं। बच्चे खुश होकर खरीद रहे हैं। तभी दोनों ओर से गांव वाले आते हैं, एक-दूसरे को पाकर खुश होते हैं, अपना-अपना सामान रखकर आपस में गले मिलते हैं। बाजार को देखते हैं, और भी लोग आते-जाते हैं। तभी कुछ गांव की औरतें नृत्य शुरू करती हैं। सब अपना-अपना नृत्य दिखाती हैं—पहाड़ी नृत्य, राजस्थानी नृत्य, उत्तर प्रदेश का नृत्य होता है। बच्चे भी नाचते हैं—एक ओर पेड़ की आड़ में एक अंग्रेज अपने दो प्रमुख अधिकारियों के साथ खड़ा-खड़ा देख रहा है। बच्चों के नृत्य के बाद मेला समाप्त हो जाता है, सब अपना-अपना सामान लेकर रंगमंच से बाहर चले जाते हैं। अंग्रेज दोनों अधिकारियों के साथ रंगमंच पर सामने आ जाता है।]

दृश्य-3 : अंग्रेजों का आना

अंग्रेज : (अपने लोगों से) बैरी रिच कन्ट्री। बीत अमीर देश। अम यहां रहना मांगता।

अधिकारी-1 : यस सर। सुना है यहां बहुत पैसा, बहुत सोना, चांदी हय। और बीत हीरा जवाहरात भी हय।

अधिकारी-2 : यस सर। इस मुल्क को सीने की चिड़िया बोलता।

[अंग्रेज अफसर इधर-उधर देखते हुए मुस्कराता है। तभी कुछ आवाज सुनाई देती है। अंग्रेज और उसके सिपाही पेड़ के पीछे फिर छिप जाते हैं। और देखते हैं।]

दृश्य-4 : दो राजाओं का युद्ध

[तभी एक ओर से एक राजा और उसके अंगरक्षक आते हैं। दूसरी ओर से दूसरा राजा और उसके अंगरक्षक आते हैं। वे एक-दूसरे को देखकर मुंह फेर

लेते हैं। चले जाते हैं, फिर आते हैं, गुस्से से देखते हैं। फिर आपस में लड़ने लगते हैं। (अंग्रेज इनके मनमुटाव को भांप लेता है।) तभी अंग्रेज आकर उनका बीच-बचाव करता है। एक ओर एक राजा को उसके सिपाही ले जाते हैं। दूसरी ओर राजा को वह स्वयं ले जाता है।

अंग्रेज : (राजा से) ये आपका अपमान किया—आप बदला लेना नहीं मांगता?

राजा : मैं इतना बड़ा राजा, ये मेरा क्या मुकाबला करेगा। (मूंछ पर हाथ फेरता है) मैं उसको अभी मजा चखा दूंगा।

अंग्रेज : बौत ठीक। ठीक बोला—आमारा पास बौत सिपाही। अम भी आपका मदद करेगा।

राजा : आप लोग कौन हैं?

अंग्रेज : अम बौत दूर विदेश से आया। अमारा काम सबका मदद करना।

राजा : (खुशी से) आप हमारी मदद करेंगे?

अंग्रेज : हां-हां। करेगा। (हाथ मिलाते हुए) वादा करता है।

[राजा खुश होकर, दूसरे राजा की ओर देखकर 'अब मजा चखा दूंगा'। भाव प्रदर्शित करके चला जाता है। दूसरी ओर से सिपाही दूसरे राजा को लाते हैं।]

अंग्रेज : (दूसरे राजा से) ओ आपका अपमान किया, अमको बौत अफसोस।

राजा : मेरे पास बहुत बड़ी सेना है, मैं अभी इसके होश ठिकाने लगा दूंगा।

अंग्रेज : बौत ठीक। ठीक बोला। अमारा पास बौत पैसा। बौत रुपया। अम आपका मदद करेगा।

राजा : आप कौन हैं?

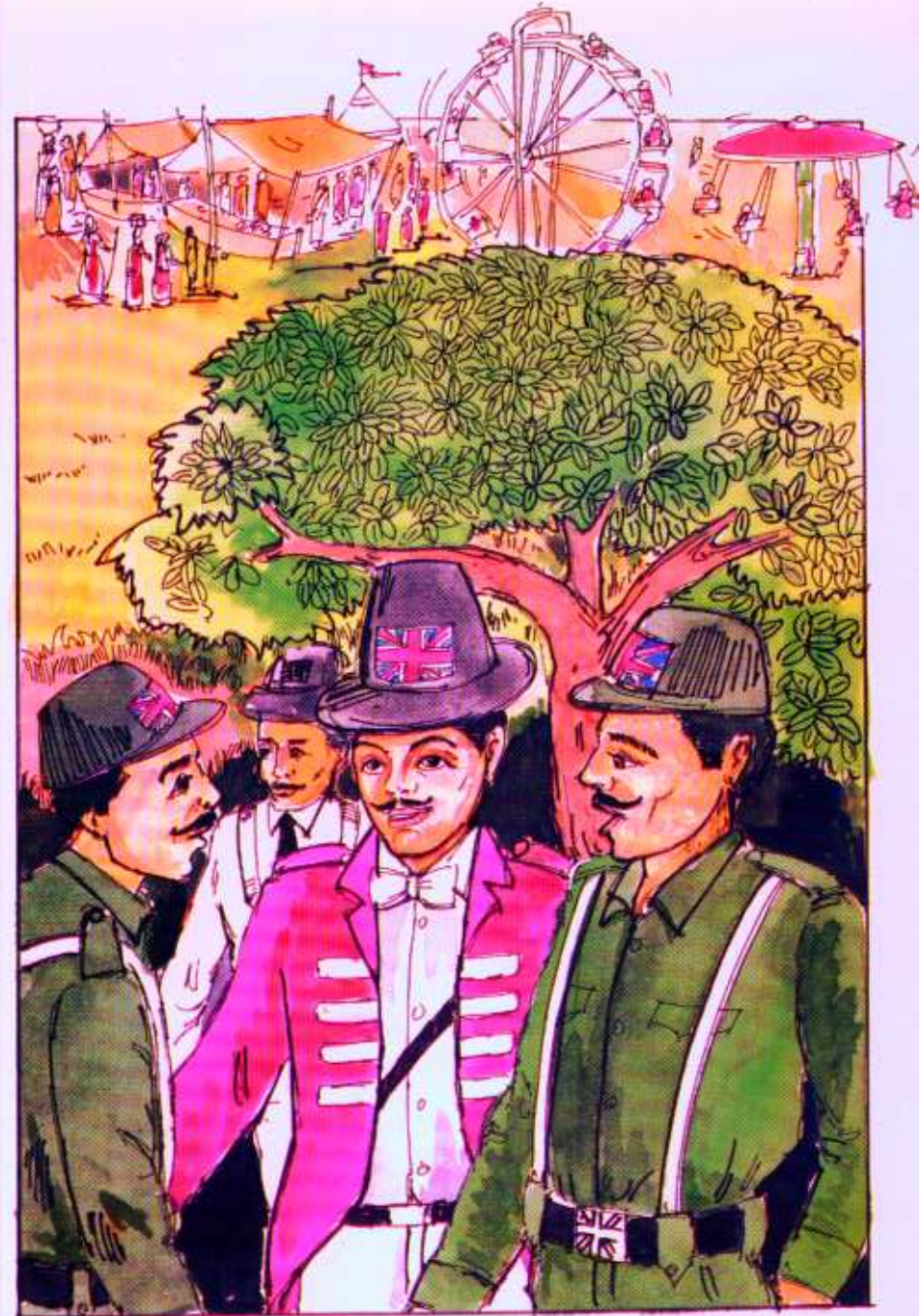
अंग्रेज : अम लोग बौत दूर विदेश से आया। सब लोगों को मदद करना मांगता। आपको कितना रुपया मांगता।

[थैली निकालकर राजा को दिखाता है। राजा थैली की ओर ललचाई नजरों से देखता है।]

राजा : सच। आप हमारी मदद करेंगे?

अंग्रेज : (हाथ में हाथ लेकर) अम झूठ नहीं बोलता। अम बचन देता। आपका मदद करेगा।

राजा : (दूसरे राजा की तरफ हिकारत से देखते हुए) अब आना मैदान में।



[यह राजा भी खुश होकर चला जाता है।—अंधकार]

वाचक : इस प्रकार अंग्रेजों ने चालाकी से अलग-अलग बातें कहकर उनके आपसी मन-मुटाव को और बढ़ा दिया। धीरे-धीरे यहां के शक्तिशाली राजा उनके चुंगल में फंस गये। कुछ इस तरह का जाल बिछाया कि जिन राजाओं ने उनकी अधीनता स्वीकार नहीं की, उन्हें धोखा देकर सेना की मदद से बंदी बना लिया।

दृश्य-5 : स्वाभिमानी राजा का दरबार

[राजा-रानी, राजकुमारी और उसके मंत्री दरबार में बैठे हैं। कुछ लोग उपहार लेकर आते हैं—राजा-रानी को राजकुमारी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में बधाई देते हैं। राजा उन्हें सादर सभा में बैठाते हैं।]

मंत्री : महाराज, आज राजकुमारी का जन्मदिवस है, नृत्य का आयोजन रखा है।

राजा : हां मंत्री जी, क्यों नहीं।

मंत्री : (ताली बजाकर) नृत्य प्रारंभ हो।

[नर्तकी मंच पर आकर नृत्य करती है। तभी एक प्रहरी आकर खबर देता है कि कुछ विदेशी लोग राजकुमारी के लिए उपहार लाए हैं—राजा उन्हें अंदर आने की इजाजत देता है। वे एक बड़े से थाल में उपहार लाते हैं। राजकुमारी को देते हैं। उपहार देने के बाद एक चिट्ठी राजा को देते हैं। मंत्री चिट्ठी पढ़ता है।]

चिट्ठी—“हम विदेशी लोग हैं...दूसरों की मदद के लिए हमने कुछ सिपाहियों का जत्था बनाया हुआ है। हमें मालूम हुआ है कि आपके राज्य को अन्य राज्यों से खतरा है, यदि आप अनुमति दें तो हम अपने सिपाहियों द्वारा आपकी सहायता कर सकते हैं।

[चिट्ठी पढ़कर राजा आश्चर्य-चकित सा इधर-उधर देखता है। चारों ओर सन्नाटा छा जाता है।]

राजा : अपने सरदार से कहना—इस विषय पर हम उनसे कल बात करेंगे।

सिपाही : महाराज, वो बाहर खड़ा है—थोरा मिनिट लगेगा, आप उनका बात सुनो।

राजा : अच्छा। (सिपाहियों से) जाओ बाहर परदेशी बंधु खड़े हैं। उन्हें सादर यहां लिया लाओ।

[अंग्रेज ऑफिसर का प्रवेश। वह राजा का अभिवादन करता है।]

राजा : हमारी राजकुमारी का आज जन्मदिन है। आप हमारे मेहमान हैं। बैठिए आपका स्वागत है।

[पर वह खड़ा रहता है।]

अंग्रेज : अम आपका दोस्त बनके आपको सहायता देना मांगता।

राजा : सहायता, पर मुझे किसी की सहायता की जरूरत नहीं, फिर आप विदेश से आए हैं। मैं अपने देश में किसी विदेशी मित्र की सहायता नहीं चाहता।

अंग्रेज : (गुस्से से) हूं। ओ, आई सी।

[कहकर एक कोने में जाकर कुटिल भाव दर्शाकर चला जाता है।]

राजा : (राजा नर्तकी की ओर नृत्य के लिए इशारा करके कहता है) नृत्य प्रारंभ करो।

[नर्तकी नाचती है, सब लोग नृत्य देख रहे हैं, तभी चुपके से पीछे-पीछे आकर अंग्रेजों की सेना पूरे राजदरबार को घेर लेती है। अचानक जब राजा की नजर उन सिपाहियों पर पड़ती है तो आश्चर्य से पूछता है।]

राजा : यह सब क्या है?

[चारों ओर से सेना के सिपाहियों से पूरे दरबार को घिरा पाकर सारे दरबारी हाथ ऊपर करके खड़े हो जाते हैं। एक राजा भागने का प्रयत्न करता है, तभी...]

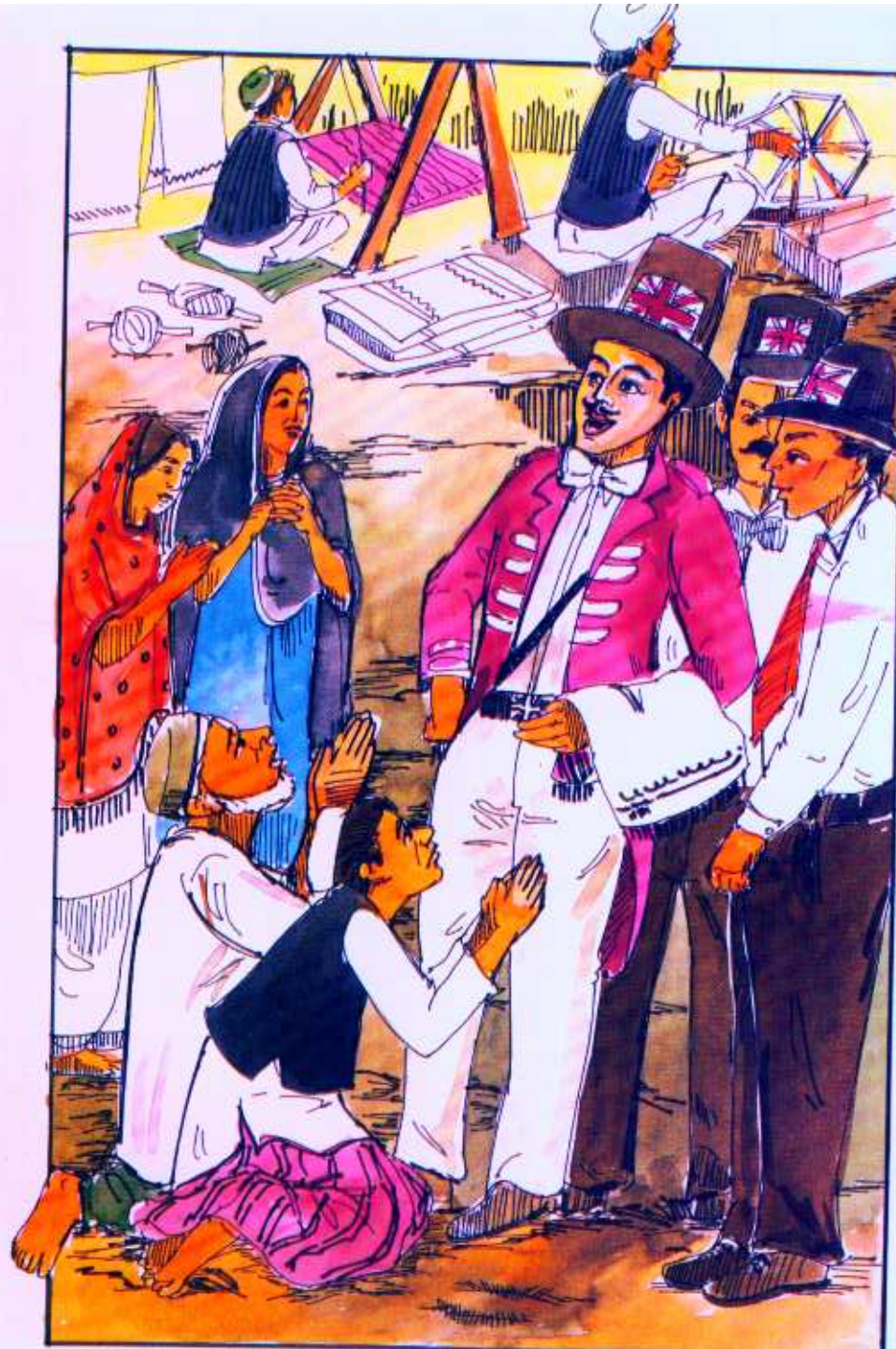
अंग्रेज : कोई नई भागने का, भागने की कोसिस नई।

राजा : मंत्री जी, हमारी सेना कहां है?

अंग्रेज : (हंस्ता है) तुमारी सेना अमारे काब्जे में।

राजा : तो आपकी मित्रता का यही सबूत है?

अंग्रेज : (अपने सिपाहियों से) अम कोई बात नई सुनना मांगता—सबको बांदी बनाओ।



राजा : (आक्रोश से) धोखे से बंदी बनाकर तुमने वीरता का नहीं, कायरता का परिचय दिया है विदेशी बंधु—याद रखना, तुम्हारी गोरी चमड़ी का यह काला कलंक कभी नहीं मिट पायेगा। इसका परिणाम जरूर भुगतना पड़ेगा।

सब : हां महाराज, हम सब आपका साथ देंगे। इनसे बदला जरूर लेंगे।

अंग्रेज : (हंस्ता है) देखेगा, देखेगा।

[और अंग्रेज सिपाही सब दरबारियों को बंदी बनाकर ले जाते हैं। वे सिपाही जब नर्तकी को भी ले जाने लगते हैं, तब रानी और मंत्री कहते हैं—]

रानी : यह हमारी कलाकार है। इसने क्या बिगाड़ा है, इसे तो छोड़ दीजिए।

अंग्रेज : (एक पल ठिठकता है, सोचता है, फिर एक चालाकी वाली मुस्कान देकर) देखेगा, देखेगा। (उस नर्तकी को भी ले जाता है)

[दृश्य बदलता है। बीच में एक चबूतरा और खम्बा है। कुछ सिपाही राजनर्तकी को लाते हैं। उसे चबूतरे पर धक्का देकर खड़ा कर देते हैं...और कंटीले तारों से उसे बांधकर चले जाते हैं। वहां के निवासी इसका विरोध करते हैं तो सिपाही उन पर लाठी मारकर उन्हें भगा देते हैं। राजनर्तकी छटपटाती रहती है—उसके पैरों के पुंघरू बजते रहते हैं। फिर और लोग आते हैं, तार तोड़ने की कोशिश करते हैं, पर सिपाहियों का कड़ा पहरा किसी को कुछ नहीं करते देता।—अंधकार]

वाचक : अब हम कैद हैं। उसी के साथ कैद है, हमारी संस्कृति, संगीत, साहित्य, कला। हमारे देश में हाथ की कारीगरी के काम की दुनिया में प्रशंसा थी। मिल के कपड़ों से भी सुंदर कपड़ा हमारे बुनकर बुनते थे—चंदेरी, ढाका की साड़ी का दूर-दूर व्यापार होता था। पर अंग्रेज, उन्हें बढ़ाना था अपना व्यापार, हमारे यहां के बुनकरों के हाथ का भारीक और सुंदर बना हुआ कपड़ा वे बर्दाश्त नहीं कर सके।

दृश्य-6 : जुलाहे

[कुछ बुनकर सूत कात रहे हैं, कुछ कपड़ा बुन रहे हैं। कुछ लड़कियां कपड़े को तह लगा रही हैं। चंदेरी और ढाका की साड़ी—अंग्रेज और उनके आदमी आते हैं]

अंग्रेज अफसर : (साड़ियां देखते हैं। एक अफसर साड़ी लेकर देखता है।

जुलाहों का कपड़ा लेकर अंग्रेज अफसर से) सर, यहां का कपड़ा इतना फाइन है। हमारा कपड़ा कोई लेना नहीं मांगता।

[अंग्रेज बढ़कर उनकी साड़ी देखता है]

अंग्रेज : ये कपड़ा अमको— (लड़की खुशी से उनकी ओर साड़ी बढ़ाती हुई कहती है) ये चंदेरी की साड़ी।

अन्य दो जुलाहिन : ये ढाका की साड़ी सरकार, (दूसरी) ये चंदेरी की साड़ी इतनी बारीक है की अंगूठी से निकल जाती है।

[अंग्रेज उससे साड़ी ले लेता है और जाने लगता है]

(पहले वाली लड़की पीछे-पीछे बढ़ती है) बाबू, हमारे कपड़ों का दाम तो दे दो बाबू। (पर अंग्रेज रुकता नहीं)

(तब अन्य जुलाहिन जुलाहों को बुलाते हुए कहती है) देखो-देखो ये हमारे पैसे नहीं दे रहे।

[जुलाहे दौड़कर आते हैं, अंग्रेज के सामने घुटने बल बैठकर कहते हैं]

जुलाहा : इन साड़ियों में बड़ी मेहनत लगी है। इनका दाम दे दीजिए बाबू। (सभी जुलाहे गिड़गिड़ाते हुए कहते हैं) हमारे बच्चे भूखे मर जाएंगे, थोड़ा मेहनताना तो दे दीजिए न बाबू।

अंग्रेज : (हंसकर) ओह रुपया चाहिए, अभी देता हूं तुमको इनका मेनताना। (अपने सिपाहियों से) सिपाहियों पैकरो इनको और खाट दूयो साबकी ऊंगलिया।

[सिपाही इन्हें जबरदस्ती पकड़कर ले जाते हैं। उनकी स्त्रियां रोती बिलखती रह जाती हैं]

वाचक : (नेपथ्य से) वे बन बैठे यहां के राजा और हम गुलाम।

[अंग्रेज सिपाही कुछ लोगों के हाथ-पैरों में हथकड़ी-बेड़ी डालकर ले जाते हैं। जो गिरते-पड़ते हैं, उन्हें डंडे पड़ते हैं और घसीट कर ले जाये जाते हैं]

वाचक : हमारी जवान पर ताला है, हम बोल नहीं सकते। हमारे पैरों में बेड़ी पड़ी हैं, हम स्वतंत्र घूम नहीं सकते। लोगों को अंग्रेजों की चाल समझ में आने लगी। उनके अत्याचारों के विरुद्ध लोगों के मन में स्वाधीनता की चिंगारी सुलग उठी—दलित हों या आदिवासी, सभी वर्ग के

स्वाधीनता प्रेमी बहादुर वीरों ने इसके विरुद्ध आवाज उठायी, हथियार उठाए। झलकारी देवी, बिरसा मुंडा, ताल्या टोपे, कुंवर सिंह, नाना साहब, हजरत महल, बख्त खां जैसे वीरों में एक था मंगल पांडे। मंगल पांडे, जिसने अंग्रेजी सरकार की सेना में होते हुए भी सैकड़ों हथियारबंद सिपाहियों के सामने अंग्रेज अफसर के आदेश को बहादुरी से ठुकरा दिया।

दृश्य-7 : मंगल पांडे

[एक अंग्रेज अफसर के सामने मंगल पांडे हाथ में बंदूक लिए खड़ा है। उसके पीछे हथियारबंद सिपाही हैं।]

अंग्रेज : मांगाल पेंयडे, बांदूक में कारतूस भरो।

[मंगल पांडे गुस्से से अंग्रेज को देखता है, पर कारतूस नहीं भरता]

अंग्रेज : तुमको बोला न! कारतूस मुंह से खाटो और बांदूक में डालो।

मंगल पांडे : नहीं, इससे हमारा धर्म नष्ट होता है, इसे हरगिज नहीं भरूंगा।

अंग्रेज : कम्पानी सरकार से वागावत, मांगाल पेंयडे जानता तमको फांसी होने सकता।

मंगल पांडे : मुझे इसकी कोई परवाह नहीं।

अंग्रेज : तुमारा एतना हेम्मत, सिपाहियो पैकड़ों ईसको, हैथकड़ी लगाओ, जेल में डालो।

[मंगल पांडे बहादुरी से वहीं खड़ा रहता है, दो सिपाही बढ़कर उसे पकड़ते हैं, तभी मंच पर अंधकार हो जाता है]

वाचक : यही था वह मंगल पांडे, जिसे तरह-तरह की यातनाएं दी गईं।

अंग्रेज सिपाही लोगों की बगावत के डर से जेल में फांसी न देकर उसे जंगल में ले गए और पेड़ से रस्सी बांधकर लटका दिया। पर उसके विद्रोह की आग ऐसी भड़की कि 1857 में 10 मई के दिन मेरठ की जेलें तोड़ी गईं। फिरंगी शासकों के विरुद्ध गुस्से से भरे घुड़सवार और पैदल सिपाहियों के साथ शहरों और गांवों तक के निवासी उसी रात दिल्ली के लिए चल पड़े। 11 मई को लाल किले पर कब्जा करके मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर को बादशाह का ताज पहनाकर



आजाद हिंदुस्तान घोषित कर दिया गया। इस प्रकार 1857 में 10 मई का दिन इतिहास में अमर हो गया।

वाचक : देश के वीरों की इस अटूट शृंखला में ऐसी ही एक वीरांगना थी झांसी की रानी लक्ष्मीबाई। उसने लड़ाई में डटकर अंग्रेजों का मुकाबला किया। पर हाय!

दृश्य-8 : झांसी की रानी

[शोर-गुल, गोलियों और तोपों की आवाजें, किले में भगदड़। मंच के पीछे के हिस्से में कुछ ऊंचाई (रिम्प) पर अंग्रेज और झांसी की रानी के सिपाही तलवारों से युद्ध कर रहे हैं। नेपथ्य से चीख, पुकार, पकड़ो, मारो की आवाजें आती हैं, तभी रानी लक्ष्मीबाई युद्ध वेश में अपनी प्रिय सखी मंजर एवं अन्य सिपाही सखियों के साथ बहादुर वीरों की तरह मंच पर आती हैं।]

झांसी की रानी : (मंच पर आकर अपनी सखियों से) हमारा मोर्चा तो इतना मजबूत था, वहाँ अंग्रेज घुसे कैसे? बताओ न मंजर यह सब कैसे हुआ?

[तभी कुछ सैनिक एक आदमी को धक्का देकर रानी के सामने गिरा देते हैं।]

सैनिक 1 : महारानी जी, यही है वह गद्दार—जिसने थोड़े से चांदी के टुकड़ों के लालच में हमारे सबसे मजबूत मोर्चे का द्वार खोल दिया।

झांसी की रानी : (गद्दार से) ओह नीच, टुकड़खोर। देश के साथ विश्वासघात।

सैनिक 2 : महारानी जी, महारानी जी शीघ्रता करें—अंग्रेजों ने किले को चारों ओर से घेर लिया है।

झांसी की रानी : (गद्दार से) सुन रहा है न नमकहराम, झांसी की दुर्गति का हाल—अब हमें झांसी छोड़नी होगी।

(अपनी सखियों और सिपाही से) पर सुनो, हम सब जो यहां हैं, प्रण करते हैं, मरते दम तक स्वतंत्रता के लिए लड़ते रहेंगे (सब एक के ऊपर एक तलवार रखकर प्रण करते हैं)—रानी लक्ष्मीबाई तुरंत घोड़े पर चढ़कर जाने की मुद्रा के साथ मंच से बाहर निकल जाती है, इसके पीछे-पीछे सभी सिपाही भी महारानी जी विजयी हों, महारानी जी विजयी हों, कहते हुए चले जाते हैं।

[सब चले जाते हैं। घोड़ों की टाप, युद्ध के गोलों की गरज, लोगों की चीख-पुकार सुनाई पड़ती है। फिर घोड़ों की टाप दूर-दूर होती सुनाई पड़ती है।]

वाचक : इस तरह एक बार फिर स्वार्थी लालची गद्दारों के कारण आजादी मिलते-मिलते रह गई। खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी। झांसी की रानी नहीं रही, पर स्वतंत्रता की वह चिंगारी कभी बुझी नहीं, रह-रहकर भड़कती रही। पंजाब के लाला लाजपत राय, महाराष्ट्र के बाल गंगाधर तिलक, बंगाल के विपिन चंद्र पाल जैसे नेताओं ने अंग्रेजों की शोषण नीति को अच्छी तरह पहचाना और उसका डटकर विरोध किया। ये तीनों नेता लाल, बाल, पाल के नाम से विख्यात हुए। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय का वंदे मातरम् गीत देश की आजादी के आंदोलन का महत्वपूर्ण नारा बन गया।

दृश्य-9 : अंग्रेजी शासन से विरोध

[मंच पर चार चौकियों पर चारों नेता, लाला लाजपत राय, विपिन चंद्र पाल, बाल गंगाधर तिलक और बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय खड़े हैं। उनके सामने बच्चों की टोलियां बैठी हैं। जो नेता बोलता है, उसी पर प्रकाश।]

बाल गंगाधर तिलक : स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

[ये नारे एक बार नेता, एक बार बच्चे, इस प्रकार दो-दो बार होंगे।]

बच्चों की टोली : लेकर रहेंगे, लेकर रहेंगे।

लाला लाजपत राय : फिरंगी सरकार।

बच्चों की टोली : नहीं चलेगी, नहीं चलेगी।

विपिन चंद्र पाल : विदेशी चीजों का बहिष्कार करो।

बच्चों की टोली : बहिष्कार करो, बहिष्कार करो।

बंकिम चंद्र : वंदे मातरम्, वंदे मातरम्।

बच्चों की टोली : वंदे मातरम्, वंदे मातरम्।

[वंदे मातरम् कहते हुए सब नेता और बच्चों की टोली नारे लगाती हुई जुलूस में बदल जाती है। जुलूस को आता देख अंग्रेज और उसके प्रमुख सिपाही अपने अन्य सिपाहियों के साथ जुलूस पर हमला करने के लिए तैयार खड़े हैं। अंग्रेज सिपाही जुलूस पर लाठियों से हमला करते हैं। पर जुलूस के लोग हिम्मत से



आगे बढ़कर विदेशी चीजों को आग में डालते हैं। भारत माता की जय, वंदे मातरम् के नारे लगते रहते हैं। अंग्रेज सिपाहियों के प्रहार से कुछ लोग गिर भी पड़ते हैं, कुछ को चोट लगती है। इसी के साथ मंच पर अंधकार हो जाता है।

वाचक : इतने दमन के बावजूद हमारे ही देश के कुछ स्वार्थी लोगों ने अंग्रेजों के पिटू बनकर अपने ही देशवासियों का शोषण किया, गांव के भोले-भाले किसानों को लूटकर स्वयं अपना और अंग्रेजों का खजाना भरा।

दृश्य-10 : गांव का दृश्य, मुखिया, जमींदार

[गांव का दृश्य, कुछ स्त्रियां धान कूट रही हैं। कुछ चक्की पीस रही हैं, गेहूं फटक रही हैं। तभी कुछ किसान खेत से बैल लेकर लौटते हैं। कुछ बोरों में अनाज भर कर लाते हैं, सब लोग खुश हैं, बच्चे खेल रहे हैं। गाना बजता रहता है। जमींदार, अंग्रेज अपने कारिन्दे के साथ आते हैं और एक कोने में बात करते हैं।]

जमींदार : साहब, अगर हम इनसे ज्यादा लगान वसूल करें तो आपको और हमें दोनों को फायदा होगा।

अंग्रेज : बौत अच्छी बात सोचा, जाओ अम तमारा मदद करेगा।

[अंग्रेज चला जाता है, जमींदार चालाकी भरी नजर से अंग्रेज की ओर देखकर फिर किसानों की ओर देखकर चुटकी बजाता है, और किसानों की ओर चल पड़ता है, पीछे कारिन्दा है। जमींदार चलकर बीच रंगमंच पर पहुंचता है।]

मुखिया गांव का : पायं लागूं सरकार।

जमींदार : कहो मुखिया, गांव की फसल कैसी हुई?

मुखिया : फसल तो अच्छी नहीं हुई सरकार।

जमींदार : (हंसते हुए) हां हां, वो तो मुझे मालूम है, तुम्हारी फसल कभी अच्छी नहीं हो सकती। कहो वसूली चुका दी?

मुखिया : सरकार वसूली तो सारी चुका दी।

जमींदार : मुंशी जी जरा खाते में देखना, इस गांव का लगान कितना बचा है।

मुंशी : (खाता देखकर) पूरे पांच सौ बाकी हैं सरकार।

मुखिया : नहीं सरकार, हमने पूरा लगान चुकाया है। (कुछ और किसान आकर) हां सरकार, आपका आदमी आकर सब लगान ले गया।

जमींदार : तो क्या खाते में गलत लिखा है?

मुखिया : हम क्या जाने। हम तो यही जानते हैं, पूरा-पूरा लगान चुका दिया।

जमींदार : हम कुछ नहीं जानते, जल्दी से रुपया वसूल करके दो।

मुखिया : अब रुपया कहां से देंगे सरकार।

जमींदार : हम कुछ नहीं जानते। मुंशी जी, इनका सारा अनाज उठवाकर ले चलो।

मुखिया : ऐसा न करें सरकार, गांव उजड़ जाएगा।

(बच्चों को दिखाते हुए) ये सब भूख से मर जायेंगे।

[जमींदार के आदमी आकर अनाज के बोरे ले जाते हैं। किसान उन्हें रोकते हैं, पर कोई नहीं सुनता। गांव वाले रोते रह जाते हैं।]

मुखिया : हे भगवान, अब क्या होगा (कहकर गिर पड़ता है)। सब लोग उसे उठाने दौड़ते हैं, उसे उठाकर कंधे पर हाथ रख, फिर ले जाते हैं)

दृश्य-11 : अकाल

[अकाल-भूख से व्याकुल गरीब किसान भीख मांग रहे हैं। गिर-गिर पड़ते हैं, फिर किसी तरह उठकर।]

एक किसान : एक रोटी दे दो, बाबू।

दूसरा किसान : हे बाबा, अब नहीं रहा जाता। एक टुकड़ा ही दे दो।

किसान औरतें : दो-चार दाने चावल ही दे दो बाबू।

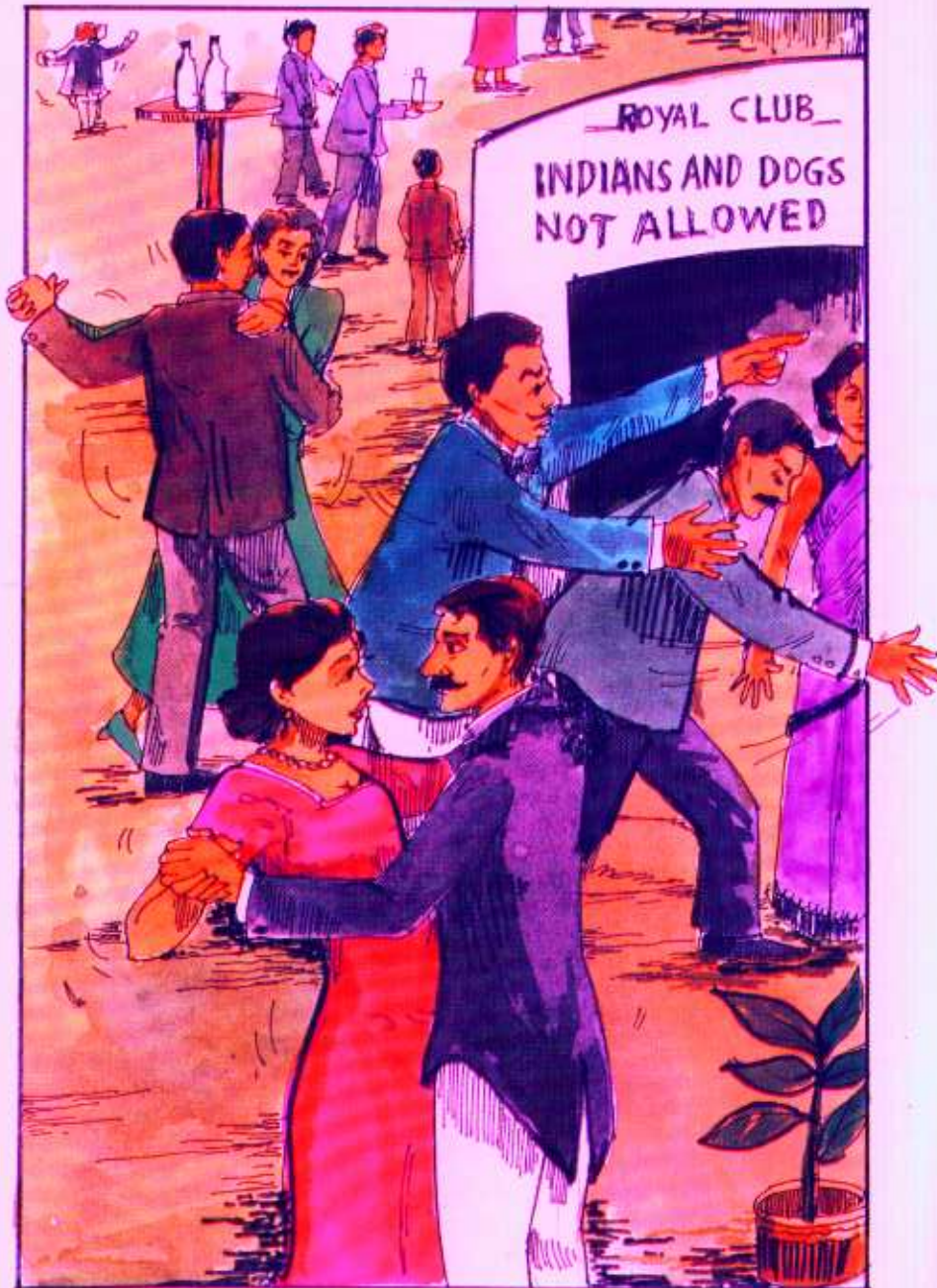
[अंग्रेज का जमींदार के साथ प्रवेश। जमींदार अंग्रेज के ऊपर छाता लगाये हुए है। अंग्रेज गरीब किसानों को देखकर बड़े घमंड से मुस्कराता रहता है। किसान अंग्रेज से भीख मांगता है, पैर पकड़कर विनती करता है, पर अंग्रेज हिकारत से देखते हुए।]

अंग्रेज : काले आदमी। भीखमंगे।

दूसरा किसान : (पैर पकड़कर) रोटी, रोटी दे दो न साहब, बहुत भूखा हूं।

अंग्रेज : (पैर से ठोकर मारते हुए) गेट आउट यू डर्टी इंडियन।

[अंग्रेज की ठोकर से किसान गिर जाता है। अंग्रेज अपनी विजय मुस्कान के साथ चला जाता है। भूख से व्याकुल लोगों का हाहाकार बढ़ता जाता है। अंधकार।]



वाचक : इस तरह अंग्रेजों के राज्य में दिन प्रतिदिन देश गरीब होता गया। जो किसान सारे देश का पेट भरते थे, खेती करके नाचते गाते थे, वही किसान दाने-दाने को मोहताज हो गए। भूख से तड़प-तड़पकर भीख मांगने को मजबूर हो गए। इधर अकाल और भुखमरी लाखों लोगों को जकड़ती गई। उधर अंग्रेज होते गए धनवान। जगह-जगह उनके बड़े-बड़े क्लब बन गए। और बढ़ती गई उनकी शान-शौकत की जिंदगी।

दृश्य-12 : क्लब

[क्लब का दृश्य, अंग्रेजों को बैरा चाय लाकर देता है। कुछ अंग्रेज स्त्रियां और पुरुष बॉल नृत्य करते हैं। तभी एक पढ़ा-लिखा हिंदुस्तानी अपनी पत्नी के साथ प्रवेश करता है। वह चाय का ऑर्डर देता है। उसको वहां कुर्सी पर बैठे देखकर अंग्रेज अफसर एकदम स्तब्ध रह जाता है।]

अंग्रेज : तुम इंडियन आंदर कैसे आया?

हिंदुस्तानी : क्यों? यह क्लब है, चाय पीने आया हूं।

अंग्रेज : तुम बोर्ड नहीं देखा, इंडियन ऐंड डॉग्स आर नोट एलाउड हेयर?
(अपने साथियों से) खड़ा क्या देखता, ढक्का मारो, निकालो बाहर।

हिंदुस्तानी : (अपने आपको बचाते हुए) अरे भाई यह अजीब जबरदस्ती है, मैं भारतवासी हूं। छोड़ो मुझे, मुझे छोड़ो। मैं अपना पैसा दूंगा।

[हिंदुस्तानी अपने आपको बचाने की कोशिश करता है। पर अंग्रेज के आदमी उसे बाहर धक्का देकर निकाल देते हैं। दरवाजे के बाहर गिराकर उसे बोर्ड दिखाते हुए कहता है]

अंग्रेज आदमी : लो पढ़ो, यह बोर्ड।

[संगीत बजता रहता है, नाच होता रहता है।]

हिंदुस्तानी : (जोर से पढ़ता है) इंडियन ऐंड डॉग्स आर नोट एलाउड हेयर।
(गुस्से से) अच्छा, हमारे भारत में हमारा ही यह अपमान, अपमान का बदला लेना होगा।

पत्नी : चलिए, मैं भी दूंगी आपका साथ।

दृश्य परिवर्तन

वाचक : अन्याय—घोर अन्याय। अन्याय, अपमान और दमन का चक्र चलता ही रहा। बढ़ता गया अंग्रेजों द्वारा भारतवासियों पर अत्याचार। जैसे ही लोग अंग्रेजों के विरुद्ध आवाज उठाते, सिर पर लाठियां पड़ती। देशभक्तों का सीना गोलियों से भून दिया जाता। हथकड़ी, वेड़ियां डालकर जेलों में ठूस दिया जाता। जालियांवाला बाग—बैशाखी की खुशियों का दिन, खूनी दिन में बदल गया।

[यहां जनरल डायर की तोपों और कुआं आदि के द्वारा जालियांवाला बाग का दृश्य दिखाया जा सकता है या वह दृश्य केवल संगीत और प्रकाश के माध्यम से भी दर्शाया जा सकता है।]

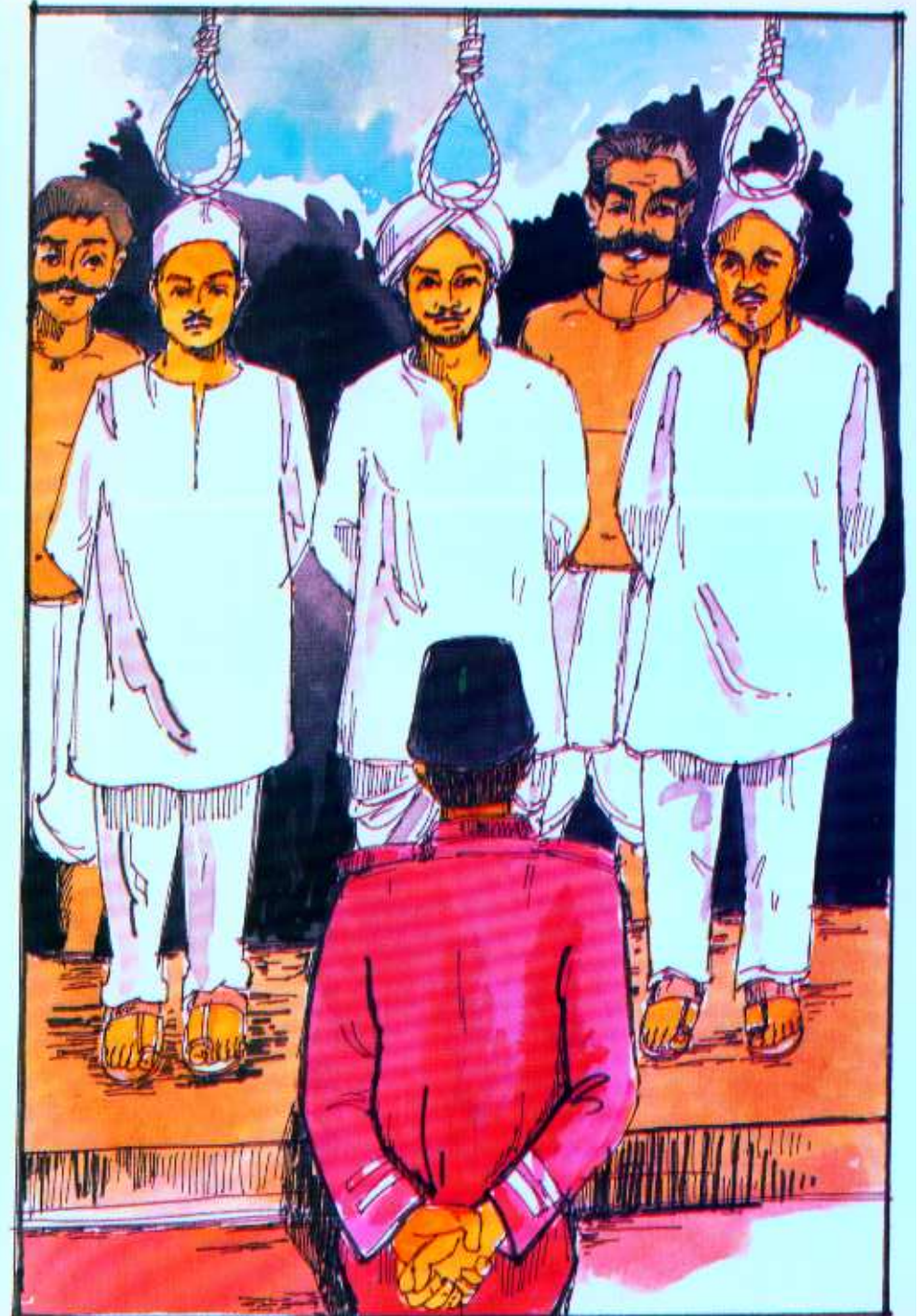
वाचक : जनरल डायर के खूनी हमले ने सैकड़ों निहत्थे स्त्री-पुरुषों को मौत के घाट उतार दिया। जनता अपना धैर्य खो बैठी। चंद्रशेखर आजाद, राम प्रसाद बिस्मिल, सुखदेव, राजगुरु, भगत सिंह जैसे नवजवानों ने अपने प्राणों की परवाह किए बिना अंग्रेजों से बदला लेने के लिए हथियार उठाये। कई नौजवानों को गोलियों से उड़ा दिया गया और कई को फांसी की सजा सुनाई गई। उनमें से थे, सुखदेव, राजगुरु और भगत सिंह। भगत सिंह जैसे नौजवान की फांसी की खबर से पूरे देश में तहलका मच गया। इंकलाब जिंदाबाद के नारे लगने लगे।

दृश्य-13 : फांसी का दृश्य

[मंच पर एक बड़े फ्रेम में तीन फांसी के फंदे लटके हैं। फ्रेम के एक ओर दो अंग्रेज सिपाही खड़े हैं, मंच पर प्रकाश होने के साथ अंग्रेज अफसर का प्रवेश, उसके आते ही—दूसरी ओर से तीन सिपाही अपनी बंदूक की नोक के आगे-आगे उन तीनों को फांसी के फंदे की तरफ लाते हैं। एक-एक फंदे के नीचे खड़ा कर देते हैं। फंदे के पास सिपाहियों का पहरा पहले से है। ये तीनों सिपाही उनके पीछे खड़े हो जाते हैं।]

अंग्रेज अफसर : तमको अम आखिरी बात बोलने का मौका देता अय, कोई बात है तो बोलो।

भगत सिंह : हमें और कुछ नहीं कहना। हम लोग हंसते-हंसते फांसी के फंदे



को पहनेंगे। पर सुन लो, इस बलिदान से देश की आजादी के लिए जान देने वालों की तादाद इतनी बढ़ेगी कि तुम्हारे साम्राज्य की पूरी ताकत भी भारत को आजाद होने से नहीं रोक सकेगी।

[तीनों एक साथ इंकलाब जिंदाबाद के नारे लगाते हैं। इसी के साथ फांसी देने की आवाज आती है और मंच पर अंधकार हो जाता है। दुखभरे संगीत के साथ गीत शुरू होता है।]

गीत

दिन खून के हमारे प्यारे न भूल जाना
खुशियों पे अपनी हम पर आंसू बहाते जाना।
सैयाद ने हमारे चुन-चुन के फूल तोड़े
सूनी पड़ी कब्र पर आंसू बहाते जाना,
दिन खून के...

दृश्य परिवर्तन

वाचक : महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, अबुल कलाम आजाद, बल्लभ भाई पटेल, सुभाष चंद्र बोस जैसे महान नेताओं ने आजादी की लड़ाई को जारी रखा। 1929 के लाहौर अधिवेशन में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में 31 दिसंबर की रात्रि के 12 बजे रावी नदी के तट पर तिरंगा झंडा फहराया गया और 'पूर्ण स्वाधीनता' का प्रस्ताव पारित किया गया। कांग्रेस कार्यसमिति ने 2 जनवरी 1930 को अपनी बैठक में यह निर्णय लिया कि प्रतिवर्ष 26 जनवरी का दिन स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाया जाए। हमारे देश के सबसे बड़े नेता महात्मा गांधी यह जानते थे कि हथियारों की लड़ाई में हमारा अंग्रेजों से जीतना बहुत कठिन है। इसलिए उन्होंने देश की जनता को अहिंसा और सत्याग्रह का रास्ता दिखाया, एकता का संदेश दिया। अमीर हों या गरीब, हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई किसी भी धर्म के मानने वाले हों, किसी भी जाति के हों, हम सभी भारतवासी हैं। बापू ने जोर देकर कहा, हमारी एकता ही हमारी सबसे बड़ी ताकत है।

[चारों ओर से आजादी का बिगुल बज उठा। घर-घर से बूढ़े, जवान, स्त्री, बच्चे, अंग्रेजी राज का विरोध करते हुए निकल पड़े...]

दृश्य-14 : 26 जनवरी, जुलूस, झंडा फहराना

[गीत गाती हुई टोली आती है]

गीत

सिर हमारा नहीं झुकेगा
यह आंदोलन नहीं रुकेगा
नहीं रुकेंगे कदम हमारे, तोड़ेंगे गुलामी के बंधन।
सिर हमारा...
हों चाहें कितने अत्याचार हों
चाहे गोलियों की लाखों बौछार हों
नहीं कभी उनसे समझौता
जो आजादी के दुश्मन।
सिर हमारा... ॥

[तभी अंग्रेज सरकार के सिपाही आते हैं। जुलूस को तितर-बितर करते हैं। देश के लोग झंडा नहीं गिरने देते। उनकी गोली से एक आदमी गिरता जाता है तो दूसरा झंडा पकड़ लेते हैं, फिर तीसरा, चौथा। अंत में एक नन्हा बच्चा भागकर आता है और झंडे को लेकर पास में लगे खंबे पर लगाकर भारतमाता की जय बोलता है। पर तभी सिपाही उसे भी गोली मार देते हैं। वह बच्चा वहीं ढेर हो जाता है, पर कुछ देर वह झंडा थामे रहता है।]

प्रमुख सिपाही : (लहराते हुए झंडे को हटाकर घृणा से देखता है) आजादी चाहिए, हूं...

[झंडे को नीचे गिराकर पैरों से कुचलकर बाहर फेंक देता है और चला जाता है। जुलूस में नारे लगते रहते हैं। अंग्रेज सिपाहियों के जाने के बाद जुलूस के लोग अपने मरे हुए साथियों को लेकर मंच से बाहर चले जाते हैं।]

दृश्य-15 : 1942 भारत छोड़ो आंदोलन जुलूस, अंग्रेजों को भगाना

वाचक : सन् 1942 में गांधी जी के नेतृत्व में कांग्रेस ने "अंग्रेजों भारत



छोड़ो" का नारा दिया। गांधी जी ने देशवासियों से कहा कि "करो या मरो", अंग्रेजों के खिलाफ यह हमारी आखिरी लड़ाई है। आजादी लेकर रहेंगे या आहुति देंगे। इससे अंग्रेज सरकार का दमन और भी कठोर हो गया। उसने सारे नेताओं को जेल में बंद कर दिया। लोगों पर अंधाधुंध गोलियां बरसाईं। कलकत्ते में जापानी बमबारी, बंगाल का अकाल और बंबई में नौसैनिक विद्रोह से आंदोलन इतना फैल गया कि अंग्रेजों को उसे दबाना असंभव हो गया। देश का कोना-कोना "अंग्रेजों भारत छोड़ो" के नारे से गूंज उठा। और अंग्रेजों को अंततः भारत छोड़ना पड़ा।

[चारों दिशाओं से देश भक्तों के जल्ये नारे लगाते हुए आते हैं]

अंग्रेजों भारत छोड़ो

भारत देश हमारा है, लेके रहेंगे, लेके रहेंगे

अंग्रेजी जालिम सरकार, नहीं सहेंगे, नहीं सहेंगे।

स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

अंग्रेजों भारत छोड़ो, भारत छोड़ो

भारतमाता की जय

इंकलाब जिंदाबाद

वंदे मातरम्, वंदे मातरम्

महात्मा गांधी की जय, जवाहरलाल नेहरू की जय

[नारे लगाते हुए यह जल्ये आगे बढ़ते हैं। सिपाहियों की लाठी खाकर गिर पड़ते हैं फिर उठकर चलते हैं। दूसरी ओर से दूसरा जल्ये आता है। गोलियां चल रही हैं पर वे बढ़ते जाते हैं। इसी तरह कई जल्ये आते हैं, जल्ये के हाथ में नेताओं की तस्वीरें, तिरंगा झंडा और नारे लिखे हुए बैनर हैं। अंत में एक लंबा जुलूस आता है। सामने अंग्रेज है, गोली चलवाता है। स्वयं पिस्तौल चलाता है। पर जनता का जोश खत्म नहीं होता, वे आगे बढ़ते जाते हैं। गोलियां भी खत्म हो जाती हैं। अंग्रेज और उसके सिपाही पीछे हटने लगते हैं और आजादी के नारों के साथ जनता उन्हें मंच से बाहर खदेड़ देती है। अंग्रेजों को निकालने के बाद जुलूस खुशी से स्वतंत्र भारत की जय, महात्मा गांधी जिंदाबाद, जवाहरलाल नेहरू जिंदाबाद, इंकलाब जिंदाबाद, वंदे मातरम् के नारे लगाती हुई मंच से बाहर चली जाती है।]

वाचक : जनता की एकता की ताकत के आगे अंग्रेजों को झुकना पड़ा। 15 अगस्त 1947 को हमारा देश आजाद हुआ। गुलामी के प्रतीक युनियन जैक को उतारकर भारत का तिरंगा झंडा फहरा दिया गया। पंडित जवाहरलाल नेहरू हमारे देश के पहले प्रधानमंत्री बने और राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति। उन्होंने सबसे पहले शहीदों को सलामी दी।

दृश्य-16 : राष्ट्रीय झंडा फहराना

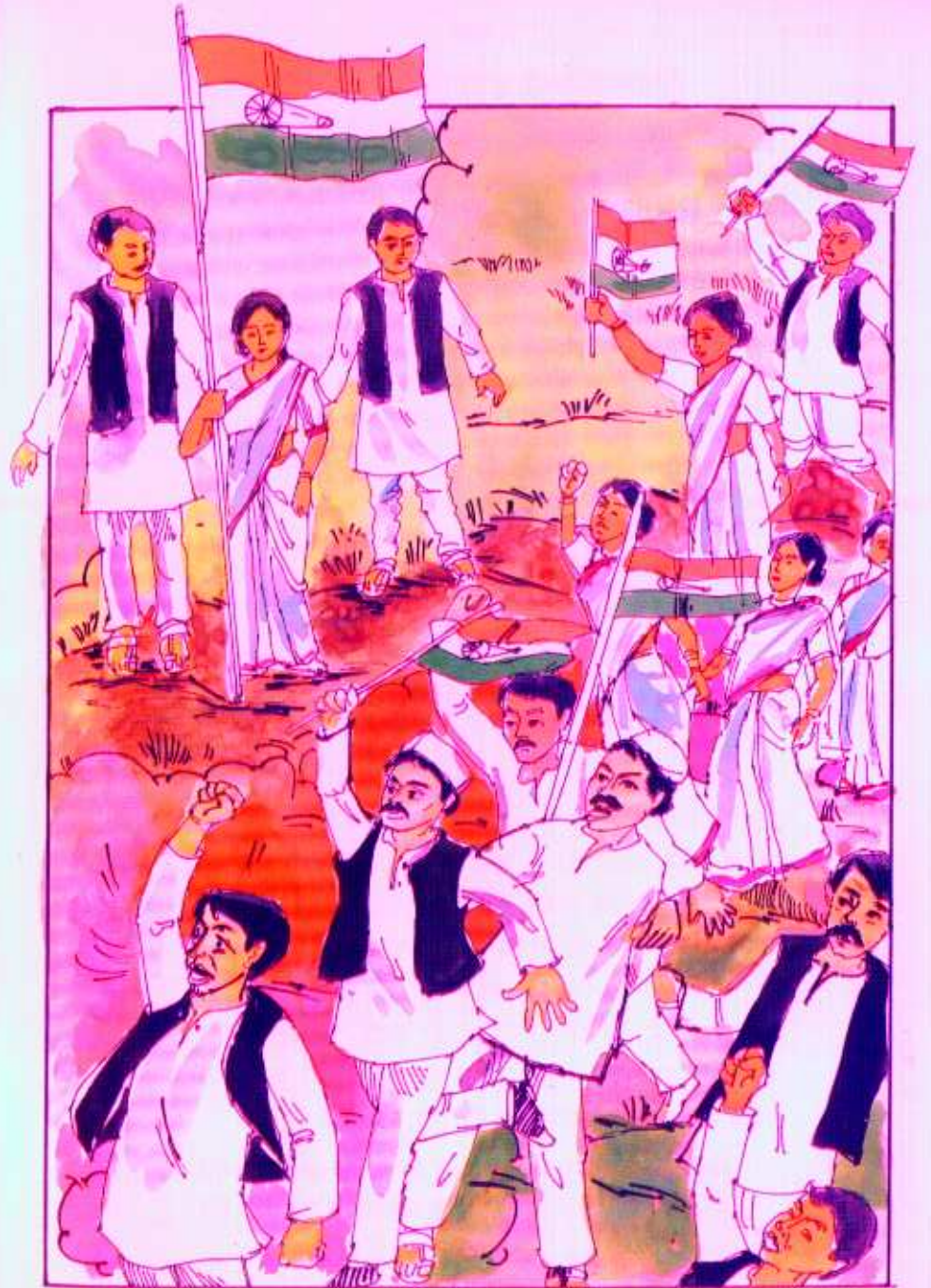
[एक बच्ची स्वाधीन भारत का झंडा लेकर आती है, मंच के बीच में खड़ी हो जाती है। वाचक इस झंडे वाली बच्ची के दोनों ओर खड़े हो जाते हैं। तभी नन्हें बच्चों की टोली हाथ में झंडे लेकर रंगमंच पर गाना गाती है। ये बच्चे खादी का सफेद कुर्ता, पायजामा, बंडी और गांधी टोपी पहने हैं।]

[नन्हें बच्चों का प्रवेश]

गीत

हम नन्हें मुन्ने देश के जवान जा रहे
हम देश और कौम के गुमान जा रहे
जहां भी जायेंगे, हमारे पांव मिलेंगे
कदम-कदम, डगर-डगर पे फूल खिलेंगे।
हम हिंद मां की मीठी मुस्कान जा रहे
हम नन्हें मुन्ने देश के जवान जा रहे
हम देश और कौम के गुमान जा रहे ॥

[गीत की समाप्ति पर नन्हें बच्चे थोड़ी तिरछी दो पंक्तियों में खड़े हो जाते हैं। अंदर से बंदे मातरम् की आवाज के साथ दो बच्चों का रंगमंच पर प्रवेश। एक के हाथ में बंदूक है, एक के हाथ में हेलमेट। बिगुल बजता है, उसके साथ एक बच्चा बंदूक उल्टी करके जमीन पर टिकाता है, और दूसरा बच्चा उसके ऊपर हेलमेट रख देता है। बिगुल के साथ शहीदों को सलाम की समाप्ति पर झंडे का गाना प्रारंभ होता है।]



गीत

झंडा ऊंचा रहे हमारा, विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
वीरों को हर्षाने वाला
सदा शक्ति बरसाने वाला
मातृभूमि पर तन मन वारा
झंडा ऊंचा रहे हमारा—

दृश्य-17 : प्रश्नकर्ता

[गाने के बाद मंच पर अंधकार, सब कलाकार मंच से बाहर चले जाते हैं।
मूल नाटक की समाप्ति के तुरंत बाद मंच पर फिर प्रकाश होता है। एक
साधारण व्यक्ति मंच पर आता है। उस पर स्पॉट लाइट है।]

साधारण व्यक्ति दर्शकों से—

आपने ये नाटक देखा। पर आजादी का सिर्फ इतिहास देखकर हम
उसकी जयंती नहीं मना सकते। हमें सोचना होगा कि हम किस
समाज की रचना करना चाहते हैं। क्या हम उन्हीं देशों की नकल
करना चाहते हैं, जिनके हम गुलाम थे? क्या इस खतरनाक नई
गुलामी को फिर लाना चाहते हैं?

देश में भ्रष्टाचार, हिंसा, पैसों की होड़ बढ़ रही है। भौतिक
सुविधाओं के लिए हरी-भरी शस्य श्यामला धरती को रौंदा जा रहा है।
जिस गरीब जनता को ये आस थी की आजादी के बाद उनकी जिंदगी
सुधरेगी—क्या उस जनता के लिए वाकई इस आजाद देश में कुछ भी
सुधरा? उनको आत्मसम्मान से जीने का मौका मिला?

क्या ऐसे ही आजाद भारत का सपना देखा था उन स्वतंत्रता
सेनानियों ने, जिन्होंने आजादी की लड़ाई में अपनी जान लगा दी?
अपने जीवन का बलिदान करने वाले उन वीरों के संकल्प को कौन
पूरा करेगा? बोलो, कोई है? बोलो न, कोई है?

[दर्शकों के बीच और विंग से बच्चों की आवाजें आती हैं—हम हैं, हम हैं, हम
हैं। सब चारों ओर से आकर मंच पर इकट्ठे होकर गाना गाते हैं।]

गीत

हम भविष्य के बच्चे नूतन ज्योति जगाएंगे
अमर शहीदों की कुर्बानी नहीं भुलाएंगे
वंदे मातरम्, वंदे मातरम्
उन वीरों ने खुशी-खुशी सर्वस्व लुटाया
आज भ्रष्ट हैं नेता, कैसा जाल बिछाया
पर हम बच्चे मिलकर भ्रष्टाचार मिटाएंगे
धर्म जाति के भेद-भाव को दूर हटाएंगे
वंदे मातरम्...

गांधी जी के सपने को साकार बनाएंगे
देशवासियों के सुख-दुख में हाथ बटाएंगे
वंदे मातरम्...

हम यौवन के अग्रदूत हैं
हम हैं विधुत
कांटो भरी राह चलने को
हम प्रस्तुत
तुफानों से टक्कर ले हम बढ़ते जाएंगे
हम भविष्य के बच्चे नूतन ज्योति जगाएंगे
अमर शहीदों की कुर्बानी नहीं भुलाएंगे।
वंदे मातरम्...

समाप्त